Dr Vandana Suman
Associate Professor
Deptt. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M.A. II Sem. Philosophy
CC-03 - Indian Linguistic trends

"Abhidha"

(अभिधा)

शब्द का व्यापार [illegible] जो अर्थ के बोधन में होता है, उसे 'अभिधा' कहते हैं। जो शब्द की शक्ति कही जाती है, अथवा अभिधा और शक्ति पर्यायवाची पद हैं। [illegible] शब्द की तीन वृत्तियाँ — गौणी, [illegible] और [illegible] — का विवेचन [illegible] किन्तु [illegible] "योगरूढ़" [illegible] शक्ति ग्रहण [illegible] कारणों से [illegible] अभिधा का बोध होता है। इस प्रकार न्याय, वैशेषिक, तथा व्याकरण दर्शनों में अभिधा के चार प्रकार बतलाये गये हैं। —

1. रूढ़
2. यौगिक
3. योगरूढ़
4. यौगिक रूढ़

किसी शब्द का मुख्य अर्थ (अभिधा) समुदाय शक्ति और अवयव शक्ति दोनों द्वारा प्राप्त होता है। समुदाय शक्ति का तात्पर्य है कि किसी शब्द की संरचना वर्णों के समुदाय द्वारा होती है और उसी समुदाय से अर्थ उत्पन्न होता है, जैसे घड़ा, कलम आदि। घ, ड़ और आ वर्णों के समुदाय

बनाता है। इसी प्रकार जुड़ने से 'घड़ा', 'घोड़ा' वर्ण 'घड़ा' आदि के
अनगिनत हैं परन्तु स्वतंत्र रूप से
इनका कोई अर्थ नहीं है। ये जब
परस्पर संयुक्त होते हैं, तो अर्थ
की अभिव्यक्ति होती है। इकाई रूप में
जो वर्ण निरर्थक हैं, समुदाय रूप में
वे सार्थक हैं। समुदाय रूप में
वह शक्ति आती है जो अर्थ प्रकट
करती है। कलम, जल आदि शब्दों
क्रमशः क, ल, म और ज, ल वर्णों
से संयुक्त होकर समुदाय बनते हैं।
इस समुदाय में निहित शक्ति से
कलम और जल का अर्थ
अभिव्यक्त होता है। किन्तु कतिपय
ऐसे शब्द हैं जिनका अर्थ समुदाय
शक्ति द्वारा अभिव्यक्त नहीं हो
पाता है। जैसे — घटकार, विभा-
गाध्यक्ष, कुलकलंक आदि। घटकार
में घट और कार दो अवयव हैं।
इसी तरह विभागाध्यक्ष और कुलकलं-
क में क्रमशः विभाग और
अध्यक्ष, कुल और कलंक
दो-दो अवयव निहित हैं। अतएव
इन शब्दों का अर्थ इनके
अवयवों के अर्थ पर निर्भर
करता है। घटकार का घट (घड़ा)
और कार (बनानेवाला) दोनों
मिलकर घटकार (घड़ा बनानेवाला)
का अर्थ 'कुम्हार' के रूप में

अभिव्यक्त करते हैं। वियोग और अवयवों के मिलने से वियोग-ग्रस्त का अर्थ किसी वियोग के दुःख पर पक्षी पर आसीन व्यक्ति का बोध होता है। इस प्रकार इन सभी शब्दों या पदों का अर्थ इनके अवयवों में निहित शक्ति द्वारा उत्पन्न या अभिव्यक्त होते हैं। समुदाय शक्ति से उत्पन्न यह अभिव्यक्त अर्थ को समुदायार्थ और अवयव शक्ति से उत्पन्न या अभिव्यक्त अर्थ को अवयवार्थ कहा जाता है। अवयवशक्ति: योग :- मम्मट की यह मान्यता है कि अवयव शक्ति योग कहलाता है। 'पाचक' शब्द 'पच्' धातु और 'ण्वुल्' प्रत्यय के मिलने से बना है। 'पच्' को प्रकृति (मूल शब्द) और ण्वुल को विभक्ति कहा जाता है। पच मूल (धातु या क्रिया का) अर्थ है। ण्वुल से कर्ता का बोध होता है। अर्थात ण्वुल कर्ता का बोधक है। अतएव 'पाचक' का अर्थ पकानेवाला होता है, वह अवयवार्थ है। परन्तु सभी शब्द प्रकृति और विभक्ति से मिलकर नहीं बनते हैं। जैसे 'पवन' इस शब्द में प, व, न और स ये तीन वर्ण परस्पर संयुक्त हैं। अतः यह शब्द वर्णों का समुदाय है। इसी समुदाय से इस शब्द का अर्थ अभिव्यक्त होता है। — कहना यहाँ अवयव शक्ति नहीं वरन समुदाय शक्ति से अर्थ को अभिव्यक्ति होती है अतः इस अर्थ को समुदायार्थ कहते हैं।

रूढ़ — रूढ़ बहु अन.

है। जिसका अर्थ परम्परा से प्राप्त चला आ रहा है। इसलिए इसे प्रचलित अर्थ भी कहते हैं। यह प्रचलित है। कोई नहीं जानता कि जल का पानी कब से प्रचलन है व्याख्या के पर इसे व्यक्ति इसी प्रचलित अर्थ परम्परा त लोग भी जल का प्रयोग करते हैं कलम किताब, आदमी आदि ऐसे ही शब्द हैं जिनका अर्थ परम्परा से चला आ रहा है। ये सभी शब्द वर्णों के समुदाय हैं। अतः इनका अर्थ समुदाय शक्ति द्वारा अपना यह अर्थ व्यक्त होता है। यही कारण है कि रूढ़ शब्द के अर्थ को समुदायार्थ कहा जाता है। इन शब्दों में वर्ण-समुदाय का एक निश्चित क्रम होता है। यह क्रम भी परम्परा से चला आ रहा है। इस क्रम में व्यवधान होने से अर्थ का अनर्थ या शब्द अर्थहीन हो जाता है। जल को लज, कलम को कलमक किताब को बताकि आदमी को मीआद कहने से कोई भी अभिव्यक्ति या उत्पत्ति नहीं होती है। न्याय दर्शन अर्थ को उत्पत्ति के सिद्धान्त को स्वीकारता है। लेकिन वैयाकरण द्वारा शब्दों ने अर्थ की अभिव्यक्ति के सिद्धान्त को माना है। स्पष्ट है कि किसी शब्द का रूढ़ अर्थ

अर्थों में ही प्रयुक्त विशेषताएँ पायी जाती हैं। (क) वर्णों के समुदाय शब्द योग्यतापात्र या आगम निर्धारित आनुपूर्वी समुदाय रूढ़ अर्थ कहलाता है। (ख) आनुपूर्वी या अभिव्यक्ति के लिए वर्ण समुदाय के वर्णों का क्रम व्यवस्थित होना चाहिए। तात्पर्य है कि रूढ़ अर्थ वर्णों की क्रम व्यवस्था पर निर्भर करता है।

(ग) यौगिक शब्द वह है जिसका अर्थ शब्दों के अवयवों के अर्थ पर निर्भर करता है। जैसे — पाचक, कुम्भकार आदि। 'पाचक' शब्द का अर्थ उसके अवयवों या अंशों 'पच्' और 'ण्वुल्' के अर्थों के संयोग से प्राप्त होता है। इसी तरह 'कुम्भकार' शब्द का अर्थ भी इसके अवयवों या अंशों 'कुम्भ' और 'कार' के अर्थों के जुड़ने से अभिव्यक्त होता है। पच् का अर्थ पकाना या पाक है और ण्वुल् का अर्थ कर्ता है। अतः वह कर्ता या व्यक्ति जो पाक (रसोई) पकाना जानता हो अर्थात् पाक कला में निपुण हो पाचक कहलाता है। इसी प्रकार कुम्भ का अर्थ घड़ा और कार का अर्थ बनानेवाला (कर्ता) है। अतः घड़ा बनाने वाले को कुम्भकार कहा जाता है। स्पष्ट है कि यौगिक शब्द का अर्थ अवयव शक्ति से उत्पन्न या अभिव्यक्त होता है। इसलि

25 MAR WED

6

यौगिक शब्द का अर्थ भी कहलाता है।
अवयवार्थ (3) योगरूढ़ शब्द
वह है। जिसका अर्थ अवयव शक्ति और समुदाय शक्ति
दोनों के द्वारा व्यक्त होता है। उदाहरण के लिए (पंकज)
शब्द लिया जा सकता है। पंक और ज इन दो शब्दों के मिलने से पंकज
शब्द बना है। पंकज शब्द के वस्तुतः
तीन अवयव हैं — पंक + जन् + ड।
पंक उपपद, जन् धातु और ड प्रत्यय है। पंक का अर्थ कीचड़, जन् का
अर्थ उत्पन्न होना और ड का अर्थ कर्ता है।
उत्पत्ति और समुदाय शक्ति द्वारा उत्पन्न
या अभिव्यक्त है। परन्तु ये दोनों
(पंक + ज) पंकज शब्द के अंशार्थ
अवयव हैं। अतएव पंकज का अर्थ
(कमल) अवयव शक्ति द्वारा उत्पन्न
या अभिव्यक्त है। परन्तु समुदाय
शक्ति द्वारा भी पंकज (पंक + जन् + ड)
का अर्थ उत्पन्न या अभिव्यक्त
होता है और वह है कीचड़
में जन्म लेने वाला। कीचड़ में
केवल कमल ही जन्म नहीं लेता
वरन् शैवाल आदि भी
जन्म लेता है। फिर भी पंकज का
अर्थ शैवाल आदि नहीं
लिया जाता, क्योंकि परम्परा
से इसका अर्थ कमल ही

2015

जाना जाता रहा है। पंकज का अर्थ रूढ़ भी है। इस प्रकार पंकज शब्द अवयवार्थ तथा रूढ़ और यौगिक दोनों स्वरूपों में समन्वय होने से ऐसे शब्द 'योगरूढ़' कहलाते हैं।

(5) यौगिकरूढ़ शब्द — रूढ़ि और यौगिक स्वरूपों का समन्वय है। किन्तु इस शब्द का अर्थ 'योगरूढ़' शब्द की भाँति अवयव शक्ति पर निर्भर नहीं करता है बल्कि मात्र परम्परा पर निर्भर करता है। जैसे — 'अश्वगंधा'। अश्व का अर्थ घोड़ा और गंधा का अर्थ गंध है। अश्व और गंधा — ये दोनों 'अश्वगंधा' शब्द के अवयव या अंश हैं। अतः अवयव शक्ति पर आधारित होने से इस शब्द का अर्थ औषधीय पौधे के रूप में जाना जाता है। अतएव इस शब्द का अर्थ समुदाय शक्ति पर निर्भर है। इसलिए इसे रूढ़ और यौगिक दोनों कहा जाता है, क्योंकि इस शब्द के अवयव होते हैं। अतएव इस प्रकार के शब्द यौगिकरूढ़ कहलाते हैं। उद्भिद ऐसा ही शब्द है। इस शब्द के तीन अवयव हैं — उद्, भिद, क्विप। इससे अवयव शक्ति से इसका अर्थ होता है

27 FRI MAR

जैसे भूमि को फोड़कर निकलनेवाले वृक्ष लता आदि। परन्तु इसका कोई अर्थ उद्भिद विशेष है। यह योगरूढ़ अभिधा शक्ति पर आधारित है। इस प्रकार यौगिक शब्द का अर्थ अवयवों द्वारा लक्षित रूप में होता है लेकिन यौगिक शब्द का अर्थ सदैव अवयव शक्ति से उत्पन्न या समुदाय शक्ति से उत्पन्न होता है।

एक बात स्पष्ट है कि अभिधा के गुरुजनों ने दो ही प्रकार बताए हैं — रूढ़ि और यौगिक से मौलिक प्रकार हैं। शेष प्रकार इनके मौलिक प्रकारों पर आधारित हैं। इसलिए योगरूढ़ को अभिधा के और यौगिक के बीच का प्रकार मानते हैं। अभिधा को संकेतार्थ भी कहा जाता है। विश्वनाथ पंचानन ने अर्थ का बोध करानेवाली संकेतित शक्ति को "अभिधा" कहा है।

2015